डॉ रेणु कुमारी
भारती मण्डन महाविद्यालय
रहिका

राजनीति विज्ञान
प्रतिष्ठा

बी० ए० पार्ट-I
PAPER - I
DATE - 18-05-2020

लोकतंत्र (Democracy)

(ख) लोकतंत्र के बहुलवादी सिद्धांत (Pluralistic Theory of Democracy) —

लोकतंत्र के बहुलवादी सिद्धांत का प्रतिपादन अमेरिका के कई लेखकों द्वारा किया गया, जिनमें लिप्सेट, राबर्ट डॉल, बैंटले, ट्रूमैन हन्टर इत्यादि है। बहुलवादी लोकतंत्र का अर्थ है एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था जिसमें राजनीतिक नीतियों का निर्माण विभिन्न समूहों के आपसी सलाह के आधार पर होता है। ताकि कोई भी समूह विशेष वर्ग सरकार में इतना शक्तिशाली न हो जाय कि वह केवल अपने ही मांगों को पूरा करने या करवाने में सफल हो जाय। इस सिद्धांत के अनुसार राजनीतिक शक्ति समाज के विभिन्न वर्गो में बँटी होनी चाहिए और नीति निर्माण में भी सभी संगठनो एवं समूहों की भागीदारी होनी चाहिए। सरकार की संस्थाओं पर किसी भी एक सामाजिक वर्ग का अकेला नियंत्रण नहीं होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

लोकतंत्र में बहुलवादी सिद्धांत व्यक्ति की राजनीतिक भागीदारी को अत्यधिक महत्वपूर्ण नहीं मानता क्योंकि सामाजिक हित समूह व्यक्ति की सारी कमियों को पूरा कर देते हैं और लोकतंत्र को भी कायम रखने में सफल हो जाते हैं। यदि लोग अपने हितों के बारे में अनभिज्ञ हो तो वे हित समूह उनकी हितों की रक्षा करते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार राजनीतिक निर्णयों में किसी एक समुदाय का एकाधिकार नहीं होता। राजनीति का उद्देश्य समाज के विभिन्न समूहों के हितों में सामंजस्य स्थापित करना होता है।

लोकतंत्र के बहुलवादी स्वरूप में अनेक विशेषताएं हैं —

1. समाज में विद्यमान अनेक समूहों में परस्पर प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप राज्य-व्यवस्था का निर्माण होता है।
2. शासन शक्ति का केन्द्र व्यक्ति न होकर समूह होता है।
3. शासन शक्ति विभिन्न समूहों की प्रतिस्पर्धा तथा एक-दूसरे पर नियंत्रण बनाए रखने के फलस्वरूप सन्तुलन में रहती है।
4. बहुलवादी लोकतंत्र में राज्य की स्थिति

एक निर्णायक की भांति होती है तथा वह समूहों की परस्पर प्रतिस्पर्धा में तटस्थ होकर कार्य करती है।

5. बहुलवादी लोकतंत्र में वैचारिक दल-दल से ऊपर उठकर कार्य होता है।

6. बहुलवादी लोकतंत्र प्रतिस्पर्धा, सहमति व दायित्व का लोकतंत्र है।

7. बहुलवादी लोकतंत्र में शक्तियों का केन्द्रीकरण न होकर शक्तियों की कमी होती है।

लोकतंत्र में बहुलवादी सिद्धांत की आलोचना कई आधारों पर की गई है। बहुलवादी लोकतंत्र विभिन्न समूहों पर निर्भर करता है। इस बात की आशंका रहती है कि आम आदमी की समस्याओं की ओर राजनीति का ध्यान नहीं पहुंच। इसी तरह यह भी सोचना उचित नहीं होगा कि एक व्यक्ति विशेष वही चाहता है जो एक समूह के हित में हो। बहुलवादी लोकतंत्र में केवल प्रमुख प्रमुख हितों को ही प्रतिनिधित्व प्राप्त हो सकता है क्योंकि समाज में रहने वाले लोगों को अनेक कम महत्व के हितों के आधार पर संगठित कर पाना कठिन होता है।